अभिव्यक्ति की आजादी और मीडिया

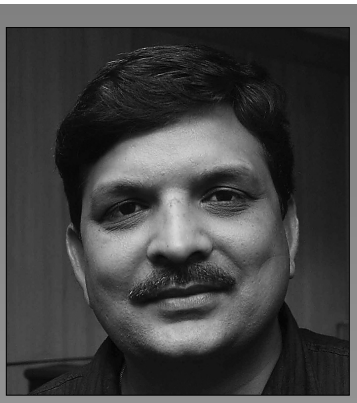

मनोज वर्मा

श्री मनोज वर्मा दो दशकों से भी अधिक समय से पत्रकारिता में सक्रिय हैं।राष्ट्रीय सहारा,दैनिक जागरण,राजस्थान पत्रिका और इंडिया टुडे से जुड़े रहे श्री वर्मा नई दुनिया में विशेष संवाददाता के रूप में कार्यरत हैं।राजनीति और समसामायिक विषयों पर पकड़ रखने वाले श्री वर्मा दिल्ली जर्नलिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं और केंद्रीय प्रेस प्रत्यन समिति(पीआईबी) के सदस्य हैं।

पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई का यह एक और चेहरा है। इस चेहरे के जरिए आईएसआई अपने हितों के लिए भारतीय बुद्विजीवी वर्ग का लंबे समय से हरण करने में लगी हुई है और हाल ही में जब कश्मीरी अमेरिकन काउंसिल का निदेशक गुलाम नबी फई वाशिंगटन में एफबीआई के शिकंजे में फंसा तो कश्मीर को लेकर पाकिस्तान और गुलाम नबी का एजेंडा बेपर्दा हो गया। लेकिन यह बात भी उतनी चौंकाने वाली नहीं क्योंकि यह बात जगजाहिर है कि पाकिस्तान भारत के खिलाफ हर वो हथकंडा अपनाता है जो कश्मीर मुद्दे को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गर्माने का काम करे। चौंकाने वाली बात तो यह है कि आईएसआई ने फई के जरिए जो जाल फैलाया उसमें भारतीय बुद्विजीवी वर्ग भी फंसता नजर आया। खुद को प्रगतिशील और सेक्युलर मानने वालों की एक जमात जिनमें पत्रकार,साहित्यकार और नामचीन लेखक शामिल हैं पर आरोप लग रहा है कि आईएसआई के पैसे पर फई की मेहमाननवाजी स्वीकार करने वाला यह बुद्विजीवी वर्ग कश्मीर के मुद्दे पर उसी सुर में बोलता नजर आया जिसकी पटकथा आईएसआई ने लिखी थी।

चौंकाने वाली बात यह है कि आईएसआई ने फई के जरिए जो जाल फैलाया उसमें भी भारतीय बुद्विजीवी वर्ग फंसता नजर आया।खुद को प्रगतिशील और सेक्युलर मानने वालों की एक जमात जिनमें पत्रकार, साहित्यकार और नामचीन लेखक शामिल हैं उन पर आरोप लग रहा है कि आईएसआई के पैसे पर फई की मेहमाननवाजी स्वीकार करने वाला यह बुद्विजीवी वर्ग कश्मीर के मुद्दे पर उसी सुर में बोलता नजर आया जिसकी पटकथा आईएसआई ने लिखी थी।

अमेरिका की संघीय जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इंवेस्टीगेशन(एफबीआई) ने जब आईएसआई के अमेरिका से चलाए जा रहे जासूसी के खेल से पर्दा उठाया तो भारत के पत्रकार जगत ने भी दांतो तले अंगुली दबा ली। एफबीआई ने 18 जुलाई को वर्जीनिया की एक अदालत में आईएसआई के एजेंट गुलाम नबी फई के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया। इस आरोप पत्र में फई द्वारा संचालित कश्मीर अमेरिकी परिषद को आईएसआई का मोहरा बताया गया है और कहा गया कि फई इसका आईएसआई इसे पाकिस्तान के पक्ष में कश्मीर पर दुनिया का नजरिया बदलने के लिए इस्तेमाल करते थे। इसके बाद भारत में इस तूफान का असर तो आना ही था, क्योंकि इस बार पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर सर्विस इंटेलीजेंस(आईएसआई) के बिछाए जाल में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रचे जाने वाले षडयंत्र, बड़े-बड़े जासूसी कारनामे, हर तरह के चाल फरेब से वाकिफ रहने वाली नामचीन भारतीय हस्तियां फंस गई थी। कश्मीर मुद्दे के समाधान के लिए नियुक्त मुख्य तीन वार्ताकारों में एक और मीडिया क्षेत्र में देश सबसे बड़े घराने के अखबार के संपादक रह चुके दिलीप पडगांवकर, कश्मीर और भारत-पाकिस्तान मुद्दे